हर इंसान-एक समान | एक राष्ट्र-एक जान | मेरा भारत महान

समता आन्दोलन समिति (रजि.)

प्रान्तीय कार्यालय :जी-3, संगम रेजीडेन्सी, प्लाट नं. 9-10, गंगाराम की ढाणी, वैशाली नगर, जयपुर

Website :www.samtaandolan.co.in Email :samtaandolan@yahoo.in

माननीय श्री पानाचन्द जैन
संरक्षक (पूर्व न्यायाधिपति)

माननीय श्री अशोक कुमार सिंह
संरक्षक (पूर्व मेजर जनरल)

माननीय श्री भागीरथ शर्मा
संरक्षक (पूर्व आई. ए. एस.)

पाराशर नारायण शर्मा
अध्यक्ष, मो. 094133-89665

विमल चौरड़िया
महासचिव , मो. 094140-58289

ललित चाचाण
कोषाध्यक्ष , मो. 094140-95368

प्रान्तीय उपाध्यक्ष एवं
पदेन सम्भागीय अध्यक्ष :-

जयपुर
ऋषिराज राठौड़
मो. 9694348039

अजमेर
एन. के.झामड़
मो. 9414008416

बीकानेर
वाई. के. योगी
मो. 9414139621

भरतपुर
हेमराज गोयल
मो. 9460926850

जोधपुर
कैलाश राजपुरोहित
मो. 8963095311

कोटा
डॉ. अनिल शर्मा
मो. 9414662244

उदयपुर
दूल्हा सिंह चूण्डावत
मो. 9571875488

क्रमांक 56783 दिनांक : 28.07.2021

श्रीमान मुख्यमंत्री महोदय,
राजस्थान सरकार,
विधानसभा सचिवालय,
जयपुर।

विषयः– "समता–वृक्ष" और "समता पीपल/बरगद–वन" योजना में सहयोग बाबत।

महोदया,

विनयपूर्वक निवेदन है कि देश को पर्यावरण की विकट आपदाओं से बचाने के लिए समता आन्दोलन समिति ने "समता वृक्ष" और "समता पीपल/बरगद–वन" योजना तैयार की है। इन योजनाओं का विस्तृत स्वरूप इस पत्र के साथ संलग्न है। कृपया इन योजनाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन करे। इन योजनाओं को व्यापक और सघन रूप से प्रदेश की प्रत्येक तहसील एवं ग्राम पंचायत स्तर के धरातल पर उतारने के लिए प्रदेश के प्रत्येक माननीय विधायक के सक्रिय, सद्भावी एवं विधायक निधि के सहयोग की आवश्यकता है जो आप श्रीमान के आदेशों से ही संभव है। यदि प्रदेश की दस हजार ग्राम पंचायतों में 10–10 हजार पीपल/ बरगद वृक्षों के सघन वन की योजना को अगले 10 वर्षों में योजनाबद्ध तरीके से कार्यरूप दिया जाता है तो प्रदेश के पर्यावरण एवं जलवायु में जबरदस्त सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल सकते है। देश, प्रदेश एवं आम नागरिक के हित की इस वृहद योजना को अधिकतम सफल बनाने के लिए समता आन्दोलन जैसे राष्ट्रवादी संगठन की सहभागिता अत्यन्त महत्वपूर्ण और लाभदायक सिद्ध होगी।

आपके त्वरित सकारात्मक प्रतिउत्तर की प्रतीक्षा में सादर अभिवादन सहित,

भवदीय,

पाराशर नारायण
अध्यक्ष

संलग्नः– उक्त योजनाओं का मजमून।

प्रतिलिपिः–माननीय विधायक महोदय को सादर आवश्यक कार्यवाही हेतु।

हर इंसान-एक समान | एक राष्ट्र-एक जान | मेरा भारत महान

समता आन्दोलन समिति (रजि.)

प्रान्तीय कार्यालय :जी-3, संगम रेजीडेन्सी, प्लाट नं. 9-10, गंगाराम की ढाणी, वैशाली नगर, जयपुर

Website:www.samtaandolan.in Email :samtaandolan@yahoo.in

माननीय श्री पानाचन्द जैन
संरक्षक (पूर्व न्यायाधिपति)

माननीय श्री अशोक कुमार सिंह
संरक्षक (पूर्व मेजर जनरल)

माननीय श्री भागीरथ शर्मा
संरक्षक (पूर्व आई. ए. एस.)

श्री इकराम राजस्थानी
सलाहकार, मो. 098290-78682

पाराशर नारायण शर्मा
अध्यक्ष, मो. 094133-89665

राम निरंजन गौड़
महासचिव , मो. 094144-08499

ललित चाचाण
कोषाध्यक्ष , मो. 094140-95368

प्रान्तीय उपाध्यक्ष एवं
पदेन सम्भागीय अध्यक्ष :-

जयपुर
योगेन्द्र मेघसर
(मुख्य लेखाधिकारी)
मो. 9166494225

अजमेर
एन. के.झामड़
(अधिशासी अभियन्ता)
मो. 9414008416

बीकानेर
वाई. के. योगी
मो. 9414139621

भरतपुर
हेमराज गोयल
(सेवानिवृत अधिक्षण अभियन्ता)
मो. 9460926850

जोधपुर
प्रहलाद सिंह राठौड़
(पूर्व आर. ए. एस.)
मो. 9414085447

कोटा
दिलीप कुमार शुक्ला
मो. 9414063236

उदयपुर
दूल्हा सिंह चूण्डावत
(कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष- क्षत्रिय महासभा)
मो. 9571875488

जे. एस. राजावत
संरक्षक समता ज्योति (मासिक-पत्र)
मो. 9314962106

क्रमांक

दिनांक :

"समता–वृक्ष" और "समता पीपल/बरगद–वन" योजना में सहयोग बाबत।

महोदय,

विनयपूर्वक निवेदन है कि समता आन्दोलन समिति एक पंजीकृत गैरसरकारी, गैर राजनैतिक संगठन है जो देश को सभी बुराइयों से मुक्त करके श्रेष्ठतम देश बनाने को प्रयासरत है। इस संगठन की दस राज्यों में शाखाएँ है तथा 8000 से अधिक पदाधिकारी हैं। विस्तृत जानकारी हमारी वेबसाईट www.samtaandolan.co.in पर देखी जा सकती हैं।

हमारे देश में प्रतिव्यक्ति वृक्षों की संख्या बेहद चिंताजनक है। दिनांक 05 जून 2021, पर्यावरण दिवस को प्रदेश के प्रमुख समाचार पत्रों में छपी खबरों की फोटो प्रति संलग्न है जो पर्यावरण की दिशा में किसी भी संवेदनशील देशभक्त नागरिक या संगठन को चिंताग्रस्त करने के लिए पर्याप्त है। अतः हमारा संगठन व्यापक स्तर पर सघन वृक्षारोपण की कार्ययोजनाएँ अपने हाथ में लेना चाहता है जिसमें आप का सक्रीय सहयोग वांछित है। हमारी प्रस्ताविक योजनाएँ "समता–वृक्ष" एवं "समता पीपल/बरगद–वन " हैं जिनकी मूलभूत जानकारी निम्न प्रकार है:–

(A). (1) **कार्ययोजना "समता–वृक्ष" का स्वरूप**:– प्रत्येक घर के आगे एक या दो फलदार/छायादार वृक्ष लगाना एवं सामाजिक/धार्मिक स्थलों पर सघन वृक्षारोपण करना। वृक्षारोपण, ट्रीगार्ड, खाद, पौधे एवं रखरखाव की व्यवस्था सरकार या निजी व्यक्तियों के सहयोग से समता आन्दोलन समिति द्वारा किया जाना। नियमित सिंचाई की व्यवस्था उस घर के व्यक्तियों द्वारा किया जाना है। ट्रीगार्ड आदि के अलावा दो वर्ष तक पौधों के रखरखाव/पर्यवेक्षण सहित लगभग खर्च प्रतिवृक्ष 1100–1200 रूपये आना सम्भावित है जिसमें प्रति–वृक्षारोपण रू. 200/ का सहयोग उस घर के स्वामी से लिया जा सकता है जिस घर के आगे वृक्ष लगाया जायेगा। त्रैमासिक खाद और मृत पौधों को बदलने का कार्य भी समता आन्दोलन द्वारा किया जाना प्रस्तावित है।

(2) **पौधों की व्यवस्था**:– फलदार पौधों में ल्हेसुआ, बील, ऑवला, आम, जामुन, शहतूत, खेजड़ी आदि तथा छायादार पौधों में अशोक, नीम, सरेश, जाल आदि के पौधे क्षेत्र विशेष की जलवायु के अनुसार चयन करके वनविभाग की नर्सरी या निजी नर्सरी से व्यवस्था करना ।

(3). **पौधारोपण का लक्ष्य**:– राजस्थान प्रदेश में प्रत्येक घर के सामने या आसपास के क्षेत्र में कुल एक करोड़ फलदार/छायादार वृक्षों का आरोपण। शुरूआत में चालू मौसम में प्रदेश के सात सम्भाग मुख्यालयों पर केवल 1000–1000 पौधे लगाना । अगले चरण में सभी तैंतीस जिलों में 10000–10000 पौधे लगाना । अगले चरणों में प्रत्येक तहसील में 10000–10000 पौधों का आरोपण प्रतिवर्ष करते हुए कुल एक करोड़ पौधों का लक्ष्य पूरा करना।

(4). **"समता –वृक्ष" योजना के लिए अर्थ–व्यवस्था** :– निजी औधोगिक, व्यवसायिक घरानों या कोर्पोरेट क्षेत्र के CSR फण्ड से; विधायक/सांसद निधि से; सरकारी सहायता से या जनसहयोग से ।

(लगातार–––– 2)

समता आन्दोलन समिति (रजि.)

प्रान्तीय कार्यालय :जी-3, संगम रेजीडेन्सी, प्लाट नं. 9-10, गंगाराम की ढाणी, वैशाली नगर, जयपुर

Website:www.samtaandolan.in Email :samtaandolan@yahoo.in

माननीय श्री पानाचन्द जैन
संरक्षक (पूर्व न्यायाधिपति)

माननीय श्री अशोक कुमार सिंह
संरक्षक (पूर्व मेजर जनरल)

माननीय श्री भागीरथ शर्मा
संरक्षक (पूर्व आई. ए. एस.)

श्री इकराम राजस्थानी
सलाहकार, मो. 098290-78682

पाराशर नारायण शर्मा
अध्यक्ष, मो. 094133-89665

राम निरंजन गौड़
महासचिव , मो. 094144-08499

ललित चाचाण
कोषाध्यक्ष , मो. 094140-95368

प्रान्तीय उपाध्यक्ष एवं पदेन सम्भागीय अध्यक्ष :-

जयपुर
योगेन्द्र मेघसर
(मुख्य लेखाधिकारी)
मो. 9166494225

अजमेर
एन. के.झामड़
(अधिशासी अभियन्ता)
मो. 9414008416

बीकानेर
वाई. के. योगी
मो. 9414139621

भरतपुर
हेमराज गोयल
(सेवानिवृत अधिक्षण अभियन्ता)
मो. 9460926850

जोधपुर
प्रहलाद सिंह राठौड़
(पूर्व आर. ए. एस.)
मो. 9414085447

कोटा
दिलीप कुमार शुक्ला
मो. 9414063236

उदयपुर
दूल्हा सिंह चूण्डावत
(कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष- क्षत्रिय महासभा)
मो. 9571875488

जे. एस. राजावत
संरक्षक समता ज्योति (मासिक-पत्र)
मो. 9314962106

क्रमांक दिनांक :

(5). **सघन वृक्षारोपण** :- धार्मिक स्थलों, सामुदायिक भवनों एवं सामाजिक स्थलों पर ड्रीप-इर्रीगेशन की सुविधा सहित सघन वृक्षारोपण करना जिनका रखरखाव व सिंचाई व्यवस्था उस स्थल के मालिक एवं समता आन्दोलन समिति द्वारा सामूहिक रूप से की जावेगी।

(B) (1) **कार्ययोजना "समता पीपल/बरगद-वन"का स्वरूप** :- राजस्थान प्रदेश की सभी तहसीलों में ड्रीप-इर्रीगेशन की सुविधा सहित प्रतिवर्ष 10-10 हजार पीपल-वृक्ष के पौधों का आरोपण करते हुए राज्य के प्रत्येक नागरिक के लिए एक-एक पीपल वृक्ष/बरगद वृक्ष लगाना जो चौबीस/बीस घण्टे ऑक्सीजन उत्सर्जन करता रहे। इसके लिए 30-30 फीट की दूरी पर 100 x 100 पौधों का आरोपण किया जाना प्रस्तावित है। इस पीपल/बरगद-वन के लिए अलग-अलग ट्रीगार्ड की बजाय सामूहिक फेन्सिंग, की जावेगी तथा ड्रिप-सिस्टम से सिंचाई के लिए आवश्यक टंकी निर्माण एवं सुरक्षा कर्मियों की नियुक्ति की जावेगी।

(2) **"सघन पीपल/बरगद-वन" का अनुमानित व्यय**:-एक स्थान पर **30' X 30'** की दूरी रखते हुए 10,000 पीपल-वृक्ष/बरगद वृक्ष के पौधारोपण व रखरखाव का अनुमानित व्यय निम्न प्रकार है:-

a	1000 पौधे - 4 फीट के @50/	5,00,000
b	1000 पौधे - गड्ढे खुदाई, मिट्टी, खाद व पौधारोपण @150/-	15,00,000
c	GI Wire Fencing- 3000+3000 +3000+3000= 12,000Ft. @ 60/- लेबर सहित	7,00,000
d	एंगल और तारबन्दी-600 एंगल (8फीट डेढ इंची दो सूत), 40000 फीट वायर लेबर सहित	7,20,000
e	ड्रिप इर्रीगेशन सिस्टम, बिना किसी अनुदान के (अनुदान मिलने पर उतनी ही राशि कम हो जायेगी)	40,00,000
f	प्रति हजार पौधा एक केयर टेकर कुल दो वर्ष के लिए अर्थात 10 केयर टेकर @ 10,000/- प्रति माह 24 माह हेतु-	24,00,000
g	दो चोकीदार 12-12 घण्टे के लिए @10,000 24 माह हेतु-	4,80,000
h	फुटकर व्यय त्रेमासिक खाद मृत पौधे बदलना, मासिक पानी बिल, बिजली बिल दो वर्षो के लिए-	10,00,000
	कुल रूपये :-	1,13,00,000

(लगातार—— 3)

समता आन्दोलन समिति (रजि.)

प्रान्तीय कार्यालय :जी-3, संगम रेजीडेन्सी, प्लाट नं. 9-10, गंगाराम की ढाणी, वैशाली नगर, जयपुर

Website:www.samtaandolan.in Email :samtaandolan@yahoo.in

माननीय श्री पानाचन्द जैन
संरक्षक (पूर्व न्यायाधिपति)

माननीय श्री अशोक कुमार सिंह
संरक्षक (पूर्व मेजर जनरल)

माननीय श्री भागीरथ शर्मा
संरक्षक (पूर्व आई. ए. एस.)

श्री इकराम राजस्थानी
सलाहकार, मो. 098290-78682

पाराशर नारायण शर्मा
अध्यक्ष, मो. 094133-89665

राम निरंजन गौड़
महासचिव , मो. 094144-08499

ललित चाचाण
कोषाध्यक्ष , मो. 094140-95368

प्रान्तीय उपाध्यक्ष एवं पदेन सम्भागीय अध्यक्ष :-

जयपुर
योगेन्द्र मेघसर
(मुख्य लेखाधिकारी)
मो. 9166494225

अजमेर
एन. के.झामड़
(अधिशासी अभियन्ता)
मो. 9414008416

बीकानेर
वाई. के. योगी
मो. 9414139621

भरतपुर
हेमराज गोयल
(सेवानिवृत अधिक्षण अभियन्ता)
मो. 9460926850

जोधपुर
प्रहलाद सिंह राठौड़
(पूर्व आर. ए. एस.)
मो. 9414085447

कोटा
दिलीप कुमार शुक्ला
मो. 9414063236

उदयपुर
दूल्हा सिंह चूण्डावत
(कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष- क्षत्रिय महासभा)
मो. 9571875488

जे. एस. राजावत
संरक्षक समता ज्योति (मासिक-पत्र)
मो. 9314962106

क्रमांक

दिनांक :

(3) उपरोक्त 'समता –पीपल/बरगद–वन' योजना के प्रत्येक जिला, तहसील व ग्राम पंचायत स्तर पर इस प्रकार योजनाबद्व तरीके से विस्तारित किया जा सकता है कि आने वाले दस वर्षो में राज्य के प्रत्येक नागरिक के लिए एक–एक पीपल वृक्ष/बरगद वृक्ष अर्थात कुल लगभग आठ करोड़ पीपल वृक्ष/बरगद वृक्ष तैयार हो जायें। उपरोक्त अनुमानित व्यय के आधार पर प्रति पीपल वृक्ष/बरगद वृक्ष लगभग 1130/– का व्यय आता है। अर्थात् दस वर्षो में कुल आठ करोड़ पीपल वृक्ष/बरगद वृक्ष तैयार करने का व्यय 9040 करोड़ रूपये आना है जो प्रति वर्ष लगभग 904 करोड़ रूपये होता है।

(4) प्रारम्भिक तौर पर चालू वर्ष में प्रत्येक जिला स्तर पर अथवा संभाग स्तर पर केवल एक–एक हजार पीपल वृक्ष के पौधों का आरोपण किया जा सकता है जिसकी व्यवहारिकता और सफलता का आकलन करके अगले वर्ष से प्रति वर्ष दस–दस हजार पौधों के आरोपण के जरिये कुल एक लाख पौधों के आरोपण तक इस योजना को बढ़ाया जा सकता है।

उपरोक्त दोनों योजनाओं के लिए समता आन्दोलन समिति अपना सकीय सद्भावी सहयोग देने को तत्पर है। एक सदभावी राष्ट्रवादी NGO के सहयोग से उपरोक्त दोनों योजनाओं की सफलता का प्रतिशत बढना निश्चित है। राज्य व केन्द्र सरकारों के अलावा निजि संस्थानों, व्यक्तियों या कोर्पोरेट हाऊसेज से कोष का प्रबन्धन भी आसानी से किया जा सकता है। यदि वन–विभाग, समता–आन्दोलन समिति और जिले/तहसील स्तर पर निजि व्यक्ति/संस्थान आपस में मिलकर उपरोक्त योजनाओं को कियान्वित करने की दिशा में आगे बढ़ें तो यह कदम राजस्थान राज्य के पर्यावरण बदलाव में अकल्पनीय सफलता दिला सकता है। आप जब भी चाहें, समता आन्दोलन का शिष्टमण्डल आपसे चर्चा के लिए उपस्थित होता रहेगा। आपके त्वरित सकारात्मक प्रतिउत्तर की प्रतीक्षा में सादर अभिवादन सहित,

भवदीय,

संलग्नः– उपरोक्त समाचार पत्रों की फोटो प्रतियॉ

पाराशर नारायण
अध्यक्ष

राजस्थान पत्रिका

विश्व पर्यावरण दिवस आज : 90 शहरों में हवा साफ, नदियां निर्मल, विदेशी पक्षियों का प्रवास बढ़ा

लॉकडाउन से प्रकृति अनलॉक, आबो-हवा को बूस्टर

सहारनपुर से नजर आई हिमालय की बर्फीली चोटियां

पत्रिका टीम
patrika.com

नई दिल्ली. लॉकडाउन से लोगों को भले ही दिक्कतें हुईं लेकिन प्रकृति अनलॉक हुई। आबो-हवा को मानो बूस्टर डोज मिल गई। नदियों और वायु में प्रदूषण कम हुआ। वन्यजीवों का स्वच्छंद विचरण और प्रवासी पक्षियों का कलरव दिखा। लॉकडाउन से पर्यावरण में सुधार का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से हिमालय की चोटियां नजर आईं। हिमालय सहारनपुर से करीब 300 किलोमीटर दूर है। बिहार के सीतामढ़ी जिले से माउंट एवरेस्ट नजर आया। विश्व पर्यावरण दिवस पर **पत्रिका टीम का यह विशेष नेशनल राउंड अप...**

राजस्थान

जंगलों में अवैध कटाई पर अंकुश

लॉकडाउन से शहरों की हवा साफ हुई। अप्रेल-मई में वायु गुणवत्ता सूचकांक 100 से कम रहा। फरवरी-मार्च के अंत तक स्वदेश लौटने वाले प्रवासी पक्षियों का स्टे इस साल भी मई के अंत तक देखा गया। जंगलों में आगजनी, अवैध कटाई व शिकार की घटनाएं घटीं। सीएम कोविड सलाहकार समिति के सदस्य डॉ.वीरेन्द्र सिंह के अनुसार प्रदूषण में कमी से श्वास के मरीजों को फायदा मिला है।

छत्तीसगढ़

श्वास संबंधी रोग घटे

रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग-भिलाई, रायगढ़, कोरबा में प्रदूषण का स्तर लॉकडाउन के बाद काफी घटा। श्वास संबंधी रोगों में कमी आई। चिड़िया और कौवे ज्यादा नजर आए।

मध्यप्रदेश

बदल गया बाघों का व्यवहार

लॉकडाउन से वायु और जल प्रदूषण के अलावा जंगलों में भी सुधार देखने को मिला। भोपाल का एयर क्वालिटी इंडेक्स औसतन 180 था, जो दो माह में गिरकर औसतन 100 के करीब पहुंच गया। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के जानवरों के व्यवहार में बड़ा बदलाव आया। जो बाघ पहले पर्यटकों को देखकर भी विचलित नहीं होते थे, अब गश्ती दल को देखकर जंगल की तरफ भाग जाते हैं। बाड़ों में बंद जानवर पहले से ज्यादा शांत हो गए हैं। उनमें आक्रामकता कम हुई है।

उत्तर प्रदेश गंगा की लहरों में नजर आई डॉल्फिन

गंगा, यमुना व गोमती में प्रदूषण कम हुआ। गत वर्ष मेरठ के पास गंगा में डॉल्फिन नजर आई थी। केंद्रीय प्रदूषण बोर्ड ने भी माना कि यूपी में गंगा का पानी पूरी तरह स्वच्छ है। सीपीसीबी के मुताबिक पानी में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ गई। नाइट्रेट कम हुआ।

गुजरात

'जंगल' में मंगल

लॉकडाउन के बाद चिड़ियाघरों में लोगों की आवाजाही कम होने से पशु-पक्षी शांत देखे जा रहे हैं। अहमदाबाद के कांकरिया जू के निदेशक आर.के. साहू के मुताबिक मनुष्यों को देखकर अब वे इधर-उधर नहीं भागते। अहमदाबाद का वायु गुणवत्ता सूचकांक 21 मार्च, 2021 को 314 (बहुत खराब) था, से 4 जून को 74 (संतोषजनक) के स्तर पर आ गया।

तमिलनाडु

यूरोप जैसी शुद्ध हवा

चेन्नई में लॉकडाउन के दौरान प्रदूषण कम हुआ। पशु-पक्षी अधिक स्वच्छंद विचरण कर रहे हैं। एक अध्ययन के अनुसार यहां वायु की शुद्धता यूरोप के देशों की तरह हुई है। मानवीय गतिविधियां कम होने से प्रवासी पक्षियों के अभयारण्यों में ठहराव की अवधि बढ़ी। मोरों की संख्या में वृद्धि देखी गई। समुद्री जीव-जंतुओं की संख्या बढ़ी।

प. बंगाल प्रवासी पक्षियों की परवाज

इस बार राज्य में प्रवासी पक्षियों का आगमन अधिक रहा। राज्य के प्रमुख जलाशयों में 65 प्रजाति के पक्षी देखे गए। लॉकडाउन में एकांत मिलने से राज्य के चिड़ियाघरों में पशु-पक्षी स्वाभाविक नजर आए।

ये हमें बचाते हैं मगर इन्हें बचाने पर हमारा ध्यान नहीं @ राजस्थान

भास्कर विचार धरती से मिट्टी, नदी से पानी, सूरज से अग्नि, पहाड़ों से स्थिरता और हवा से प्राणवायु लेकर ईश्वर ने इंसान बनाया। हमारी जिंदगी पर्यावरण के सांचे में ढलकर संवरी है। पर्यावरण है तो हम हैं, इसे बचाना खुद को बचाना है।

प्रकृति की सुनेंगे तो स्वस्थ रहेंगे

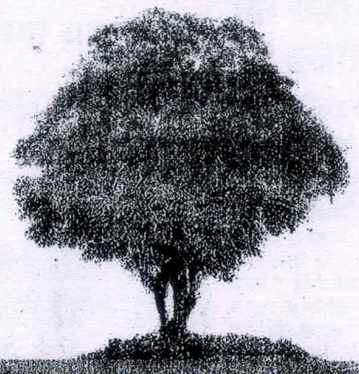

कुल पृष्ठ 18 | मूल्य ₹ 5.00 | वर्ष 25, अंक 166, महानगर

DainikBhaskar.com जयपुर, शनिवार, 5 जून, 2021 ज्येष्ठ, कृष्ण पक्ष-11, 2078 12 राज्य | 65 संस्करण

एक पेड़ का महत्व

सिर्फ एक पेड़ हमें 10 लोगों के लायक ऑक्सीजन सालभर में दे देता है। इसलिए, सांसों का महत्व समझिए, आज एक पेड़ लगाइए।

विश्व पर्यावरण दिवस विशेष अपने पर्यावरण की पहली कड़ी आप हैं, इसे सुरक्षित रखने का पहला प्रयास भी आपके हाथ में है

जीवनशैली के वो 6 बड़े बदलाव, जिन्हें अपनाकर हम पर्यावरण बचा सकते हैं

भोजन की बर्बादी रोकेंगे तो लाख टन उत्सर्जन कम

त में हर साल प्रति व्यक्ति 50 किलो खाद्य र्थ की बर्बादी होती है। 2019 में दुनिया में 9 ड़ टन भोजन बर्बाद हुआ। इससे पानी और तो बर्बाद हुआ भोजन फेंकने से पर्यावरण को ुकसान हुआ। हर साल भोजन की बर्बादी से 41 लाख टन मीथेन उत्सर्जन होता है।

▪ ा हुआ भोजन जरूरतमंद को दे सकते हैं। न हो सके तो कंपोस्ट खाद बना सकते हैं।

तक ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम हो सकता है अगर हम भोजन बर्बाद करना बंद कर दें।

पेपर मग का उपयोग बंद कर 65 लाख पेड़ बचा सकते हैं

दुनिया में हर साल 16 अरब पेपर मग का उपयोग हो रहा है। इतने कप बनाने के लिए लाखों पेड़ काटे जाते हैं और 4 अरब गैलन पानी नष्ट होता है। इसी तरह दुनिया में हर साल एक टन टिशू पेपर का इस्तेमाल हो रहा है। इसे भी सीमित किया जा सकता है।

▪ कार्य स्थल पर अपने लिए स्टील या कांच के मग रखकर हम यह बर्बादी रोक सकते हैं।

लाख पेड़ कटने से बचाए जा सकते हैं हर साल, अगर हर व्यक्ति स्टील या कांच का मग इस्तेमाल करे।

लैपटॉप, वाईफाई बंद रखेंगे तो उत्सर्जन 16% घट सकता है

घर मे खपत हो रही बिजली का 75% हिस्सा स्टैंडबाय में जा रहा है। यानी जब डिवाइस का उपयोग नहीं कर रहे हैं तब भी स्विच ऑन है और बिजली की खपत जारी है। परंपरागत बल्ब भी 90% तक ऊर्जा गर्मी पैदा करने में बर्बाद करते हैं, इनके स्थान पर एलईडी को अपनाएं।

▪ कभी भी टीवी, पंखा, वाईफाई, कंप्यूटर, लैपटॉप, प्रिंटर, एसी को स्विच ऑफ करना न भूलें।

कार्बन उत्सर्जन बिजली बनाने से हो रहा है। उत्सर्जन में बिजली दुरुपयोग का हिस्सा 16% है।

कार की स्पीड 70 से कम रखेंगे तो प्रदूषण 8% कम होगा

1.7 अरब टन ग्रीन हाउस गैस सिर्फ वाहनों के कारण पर्यावरण में पहुंचती है। अगर आप कार की स्पीड 70 से 80 किमी प्रति घंटा या इससे कम रखेंगे तो 8% प्रदूषण कम होगा। शहरों में बाहरी सड़कों और हाईवे पर 80-90 की स्पीड पर्यावरण नुकसान को कम करती है।

▪ अपने वाहन उचित स्पीड पर चलाकर हम ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन आधा कर सकते हैं।

20% अधिक ईंधन जलता है अगर कार 100 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से अधिक पर चलाई जाए।

एक पेड़ लगाकर हम एक टन CO_2 कम कर सकते हैं

सिर्फ एक बड़ा पेड़ रोज 21 किलो कार्बन डाई ऑक्साइड (CO_2) सोखता है। 100 साल में यह कम से कम एक टन कार्बन डाई ऑक्साइड कम करता है। इस तरह पेड़ हमारे पर्यावरण को स्वच्छ तो बनाता ही है, ऑक्सीजन के रूप में हर साल 10 लोगों को प्राणवायु भी देता है।

▪ हर व्यक्ति हर साल कम से कम एक पेड़ लगाकर पर्यावरण को संमृद्ध बना सकता है।

तक अधिक होती है उन घरों की कीमत, जिनके आंगन में या आसपास पेड़ होते हैं।

घर में वाटर रीचार्जिंग हो तो प्राकृतिक आपदाएं भी रुकेंगी

2001 से 2018 के बीच सूखे और बाढ़ जैसी 74% प्राकृतिक आपदाएं जलवायु परिवर्तन के कारण हुईं। इधर सड़कों, पार्किंग जैसी सख्त सतहों के कारण शहरों में बारिश का 90% तक पानी बह जाता है। जबकि जंगलों में 90% तक पानी जमीन सोख लेती है।

▪ अपने घरों की छतों पर वाटर रीचार्जिंग लगाकर हम पानी सीधे जमीन में संरक्षित कर सकते हैं।

लाख लीटर बारिश का पानी हर साल 200 वर्ग मीटर का एक घर वाटर रीचार्ज कर जमीन में पहुंचा सकता है।

स्रोत- यूएन फूड इंडेक्स 2021, नेशनल वाइल्ड लाइफ फेडरेशन, वर्ल्ड इकोनॉमी फोरम, मीडिया रिपोर्ट्स

भास्कर ग्राउंड रिपोर्ट : हमारे राज्य की इन परंपराओं को ही बचा लें तो पर्यावरण बच जाए

ओरण यानी भगवान की जमीन; मारवाड़ के 9053 गांवों में 5 लाख बीघा में फैले 3017 देववन, यहां पेड़ काटना तो दूर, टूटी टहनी उठाना भी पाप

डीडी वैष्णव/निर्मल आचार्य | मेवाड़ व मारवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों से

ओरण यानी भगवान की जमीन। मतलब 10 से 1.25 लाख बीघा तक का छोटा जंगल। मारवाड़ में हर तीन गांव पर आज भी एक ओरण है। मान्यता है कि ओरण में न तो पेड़ या डालियां काटी जा सकती हैं और न ही पेड़ से गिरी लकड़ियां कोई जलावन के लिए उठा सकता। यहां तक कि अगर इसके अंदर से गाय-भैंस का गोबर भी नहीं उठाया जाता। यही कारण है कि मारवाड में ओरण अब भी गांव के ऑक्सीजन जनरेटर बने हुए हैं। मारवाड़ के 9053 गांव में 5 लाख बीघा भूमि पर 3017 ओरण हैं। ओरण बचाने के लिए वर्षों से काम कर रहे और कई बार मामला विधानसभा में उठाने वाले मारवाड़ जंक्शन के विधायक खुशवीरसिंह जोजावर कहते हैं कि अंग्रेजी बबूल से ओरण में स्थानीय वनस्पति व घास खत्म हो रही है। जैसलमेर के भादरिया माताजी में सबसे बड़ा 1.10 लाख बीघा का ओरण है। इसमें हर साल 40 हजार पौधे लगाए जाते हैं। इसमें ज्यादातर खेजड़ी, बोर, नीम व सेवण घास है। दुखद यह है कि अब तक ओरण का सरकारी रिकॉर्ड नहीं है। इसके लिए ओरण विकास बोर्ड बनाने की जरूरत है। अंग्रेजी बबूल हटाकर इनका सीमांकन करने की जरूरत है, ताकि हमारी जैव विविधता बनी रहे।

ये है अलखजी का ओरण, क्षेत्रफल 1300 बीघा

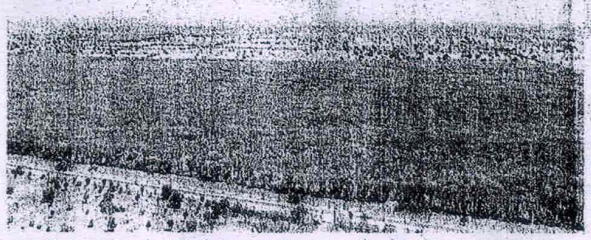

पाली की मांडा पंचायत के बाली गांव के अलखजी का ओरण है। इसमें करीब 6.5 लाख पौधे हैं।

इनकी रक्षा के लिए प्रदेश में कुर्बानियों की भी कहानियां

ओरण का निर्माण, संरक्षण पूरा समुदाय अपने स्तर पर करता है। मेघालय में भी ऐसा कॉन्सेप्ट है, जिसमें ग्रामीण जूते खोलकर अंदर प्रवेश करते हैं। राजस्थान के इतिहास में इसके संरक्षण के लिए कुर्बानियां देने तक की कहानियां हैं। बिश्नोई समाज की इसमें बड़ी भूमिका रही है। ओरण की तरह हरियाणा में तीरथवन, समाधि वन तथा गुरूद्वारा वन, असम में थान, मिजोरम में मावमुण्ड, सिक्किम में गुंपा, तमिलनाडु में कोकिलनाडु, हिमाचल में देववन, महाराष्ट्र में देवराई, अरुणाचल में गुंपा और उत्तराखंड में देवबन होते हैं।

ओरण जैसे और प्रयास जरूरी... क्योंकि प्रदेश में चाहिए 511 करोड़ पेड़, हैं सिर्फ 54 करोड़

जिला	जनसंख्या	जंगल चाहिए*	जंगल हैं	पेड़ और चाहिए
जयपुर	76,85,041	19,277	552.76	5 करोड़
जोधपुर	42,76,374	10,727	107.78	2 करोड़
अलवर	42,61,313	10,689	1196.66	2 करोड़
नागौर	38,36,320	9623	147.04	2 करोड़

*जंगल वर्ग किलोमीटर, स्रोत: वन विभाग, राजस्थान

- राजस्थान में 24,742 वर्ग किमी वन्य क्षेत्र, इसमें 8112 वर्ग किमी में पेड़ हैं।
- राजस्थान में एक व्यक्ति पर औसतन 0.00036 वर्ग किमी जंगल है।
- प्रदेश की जनसंख्या करीब 7.95 करोड़ है जिसके लिए 1,99,422.58 वर्ग किमी परिया में जंगल की जरूरत है।
- राजस्थान में अभी 8112 वर्ग किमी परिया में ही जंगल हैं और इसमें कुल 54 करोड़ पेड़ लगे हुए हैं।
- जनसंख्या के अनुसार प्रदेश में 511 करोड़ पेड़ों की जरूरत है।
- एक व्यक्ति पर केवल 7 पेड़ हैं जबकि प्रति व्यक्ति पर रोजाना ऑक्सीजन के लिए 73 पेड़ों की जरूरत होती है।

इनपुट : इशांत वशिष्ठ • राजस्थान न्यूजरूम

चार साल कीकर के पेड़ की छंटाई कर बनाया 15 फीट ऊंचा आशियाना

अब दोमंजिल की तैयारी

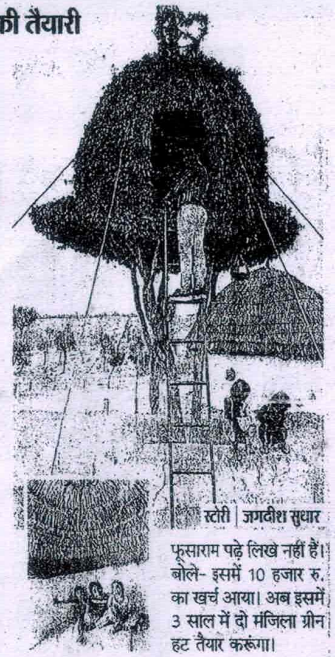

तस्वीर बीकानेर जिले के पांचू कस्बे की है। यहां 21 साल के किसान फूसाराम ने कीकर के पेड़ के ऊपर अनोखा घर बनाया है। इसके लिए 4 साल पेड़ की रोज छंटाई की और तब जाकर इसे अपने सपनों के आशियाने की शक्ल दे पाया। पेड़ पर करीब 15 फीट ऊंची और 6 फीट चौड़ी झोपड़ी है। अंदर देसी तरीके से साज सजावट की है। 2 हवादार खिड़कियां भी हैं। लकड़ी का मेन गेट है। यह झोपड़ी सर्दी, गर्मी के लिए भी अनुकूल है। इसमें 6 व्यक्ति आराम से बैठ सकते हैं और 3 आदमी सो सकते हैं।

स्टोरी | जगदीश सुथार

फूसाराम पढ़े लिखे नहीं हैं। बोले- इसमें 10 हजार रु. का खर्च आया। अब इसमें 3 साल में दो मंजिला ग्रीन हट तैयार करूंगा।

जयपुर, शनिवार, 5 जून, 2021

जयपुर, शनिवार, 5 जून, २०२१,

पत्रिका गुड लाइफ

विश्व पर्यावरण दिवस: संकल्प से बदलेगा 'हवा-पानी'

प्रकृति हमें प्राणवायु देती, आप पेड़ लगाकर उसे 'रिटर्न गिफ्ट' दें

जयपुर. पिछले दिनों पैदा हुई ऑक्सीजन किल्लत पर्यावरणीय चिंताओं की ओर इशारा भी है। पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है, प्राणवायु से लेकर जैव विविधता और अन्य जरूरी संसाधन हमें यहीं से मिलते हैं! विशेषज्ञों का मानना है कि ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाए जाएं तो ऑक्सीजन की कमी नहीं होगी। ऑक्सीजन प्लांट में भी इसका उत्पादन तभी संभव है, जब पर्यावरण में इसकी प्रचुरता होगी। हवा में 21 फीसदी ऑक्सीजन, 78 फीसदी नाइट्रोजन तथा एक फीसदी अन्य गैसें होती हैं। प्रकृति ने हमें शुद्ध पर्यावरण दिया है तो हमें भी पेड़ लगाकर उसे रिटर्न गिफ्ट देना चाहिए।

राजस्थान विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान के प्रोफेसर रामअवतार शर्मा के अनुसार, पीपल, बरगद, नीम, अशोक, जामुन आदि के पौधे ज्यादा से ज्यादा लगाने चाहिए। ये अन्य पौधों की तुलना में ज्यादा ऑक्सीजन छोड़ते हैं।

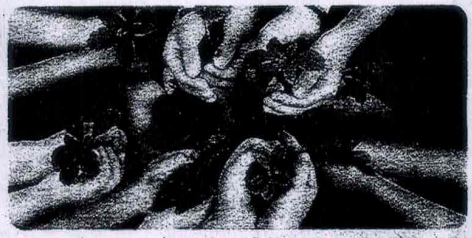

70-80% ऑक्सीजन देते हैं समुद्री पौधे।

22 घंटे ऑक्सीजन देता है पीपल का पेड़।

20 घंटे ऑक्सीजन देते हैं नीम, बरगद, तुलसी। पर्यावरण भी शुद्ध रखते हैं।

आंकड़ों से जानें सच

80 फीसदी जैव विविधता उष्ण कटिबंधीय वनों में पाई जाती है।

63 लाख वर्ग मील क्षेत्र को कवर करते थे उष्ण कटिबंधीय वन 1947 तक

32 लाख वर्ग मील क्षेत्र ही बच गया इन वनों का अब

137 पौधे व जीवों की प्रजाति लुप्त हो रही है हर दिन पेड़ों की कटाई से

10 लाख समुद्री जीव मारे जाते हैं हर वर्ष, प्लास्टिक कचरे से

अर्जुन और अशोक का पेड़ दूषित गैसों को सोखकर ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं। स्रोत: संयुक्त राष्ट्र और नेशनल ज्योग्राफी

वर्ल्ड एनवायरमेंट डे 2021 की थीम- 'ईकोसिस्टम रिस्टोरेशन' पर; प्राणवायु देने वाले ही नहीं होंगे तो हम पर भी संकट होगा

चांदपोल में बरगद के पेड़ पर 5 फीट का चबूतरा बना डाला। इससे पेड़ को ना पानी मिलेगा और ना ही ऑक्सीजन...ऐसे में इनका मरना तय है। फोटो : मनोज श्रेष्ठ

जयपुर फ्रंट पेज

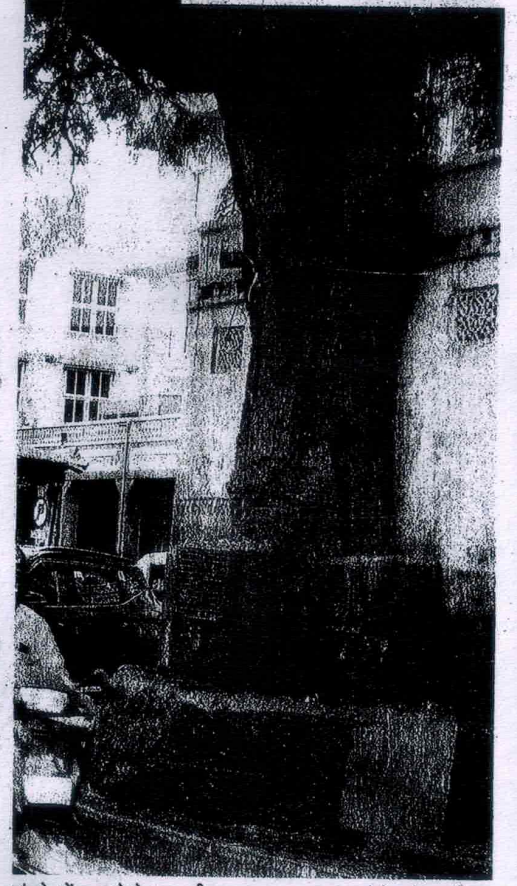

दैनिक भास्कर

दैनिक भास्कर जयपुर, शनिवार 5 जून, 2021

इन 'हत्याओं' का जिम्मेदार कौन?

3 साल पहले भी एनजीटी ने पेड़ों को सिस्टमैटिक तरीके से मारने पर सवाल उठाए थे...और निर्देश भी दिए थे कि इनके लिए हवा-पानी की जगह छोड़ें

महेश शर्मा | जयपुर

'सियासत इस कदर अहसान करती है, आंखें निकालकर चश्मे दान करती है।' यह पंक्तियां शहर में हमारी हरियाली पर खूब बैठती हैं। सबसे वीआईपी जेएलएन रोड से लेकर दूसरी प्रमुख सड़कों पर 10 हजार पेड़ ऐसे हैं जिनका नगर निगम-जेडीए ने सड़कों के शिकंजे से गला घोंट दिया है। औसतन ऐसे 15-20 पेड़ हर साल जमींदोज भी हो रहे हैं। हाल ही में दो पेड़ों की ऐसी जानलेवा तस्वीरें सामने आई हैं। हैरत की बात पेड़ों को मारने के पूरे इंतजाम करके हर साल 20 करोड़ रुपए गमले वाले पौधे-झाड़ियों पर खर्च हो रहे हैं। तीन साल पहले एनजीटी ने निर्देश दिया था इन पेड़ों को रोड में कंकरीट से कवर नहीं करके हवा-पानी के लिए खुला रखा जाए ताकि ये पेड़ सर्वाइव कर पाएं। चारदीवारी में त्रिपोलिया बाजार में एकरूपता में लगे शीशम के कई पेड़ गिर चुके हैं। चौपड़ों के बरगद एकतरफा कारोबार के चलते विकास की भेंट चढ़ गए।

सड़कों के शिकंजे से पेड़ों का दम घोंट रहे और गमलों में हरियाली पर हर साल 20 करोड़ खर्च

जरूरत 9 स्क्वायर मीटर प्रति व्यक्ति ग्रीन स्पेस की, हमारे आसपास केवल 1.60 मीटर ही ग्रीनरी

डब्ल्यूएचओ का कहना है कि शहरी क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति कम से कम 9 स्क्वायर मीटर हरियाली होनी चाहिए।

विश्व के अच्छे शहरों का औसत 25 वर्ग मीटर है। जयपुर में 2010 के अध्ययन का कहना है कि अभी यहां 1.60 स्क्वायर मीटर प्रति व्यक्ति ग्रीन स्पेस है। इसमें झालाना का 19.78 स्क्वायर किमी को भी जोड़ लेते हैं तो लगभग 5 स्क्वायर मीटर प्रति व्यक्ति पहुंच जाता है।

ऐसे में हमको 38.50 स्क्वायर किलोमीटर एरिया में ग्रीन स्पेस बढ़ाना पड़ेगा। एक्सपर्ट के मुताबिक चूंकि हम जहां रहते हैं, बड़े-बड़े संस्थान में काम करते हैं, वहां आसपास एक तिहाई एरिया में ग्रीनरी जरूरी है। ऐसे में दूर की पहाड़ियों-जंगल से पार नहीं पड़ने वाली।

प्रदेश: 1995 के बाद हरियाली बढ़ी, पर विलायती बबूल के कांटे भी

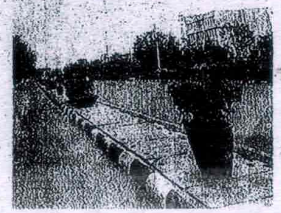

- राजस्थान का एरिया 3 लाख 42 हजार 239 वर्ग किमी है, जो कि देश का 10.40 फीसदी है।
- रिकॉर्डेड फॉरेस्ट एरिया प्रदेश का 32 हजार 737 स्क्वा. किमी है। यह कुल एरिया का 8 प्रतिशत।
- वनावरण 12282 स्क्वा. किमी तो रिकॉर्डेड के बाहर 4348 स्क्वा. किमी।
- 1994 से 2009 के बीच 859 वर्ग किलोमीटर में बढ़ोतरी हुई। जंगल भी बेहतर हुए। इसी दौरान 12.22 टेराग्राम कार्बन बढ़ा है, यानी जंगलों की स्थिति बेहतर हुई है। जबकि इसी दौरान गुजरात में 35.37 टेराग्राम घटा था।
- 2017 की तुलना में 2019 में 57.51 स्क्वायर किलोमीटर फॉरेस्ट कवर बढ़ा है।

एक्सपर्ट बोले: हमारे पास थोड़ा है और थोड़े की जरूरत है...

चूंकि राजस्थान में बेहद कम बरसात होती है। देश में रेगिस्तान का सबसे बड़ा भूभाग हमारे यहां है तो यहां पर आइडियल 20 प्रतिशत हरियाली करने में लंबा समय लगेगा। बहुत निवेश की जरूरत होगी। हालांकि सुखद बात ये है कि 1995 के बाद ग्रीन एरिया बढ़ रहा है। इसमें निरंतर निवेश की आवश्यकता है।

-डॉ. दीप नारायण पाण्डेय, पीसीसीएफ

कोरोनाकाल से हमारे ईकोसिस्टम और पर्यावरण को लाभ पहुंचाया है। लोगों, इंडस्ट्रीज को इस तरह रोका तो नहीं जा सकता, लेकिन वर्ल्ड ऑर्गनाइजेशन की थीम के मुताबिक हमको हमारे ईकोसिस्टम को सुधारने के लिए झील-जंगलों के हालात सुधारने होंगे।

-यूएम सहाय, रिटायर्ड पीसीसीएफ